

किताब-काँपी वाली परीक्षा

कालु राम शर्मा

“अरे, किताब-काँपी लेकर जाना है परीक्षा में!” सुबह-सुबह केशव और डमरू एक-दूसरे से बहस कर रहे थे। डमरू कहने लगा, “मेरे बाबूजी ने तो साफ मना कर रखा है कि किताब नहीं ले जाने का। बोर्ड परीक्षा है। परीक्षा वाले पकड़ लेंगे।”

केशव आश्वस्त था, “अरे, मैंने बड़े भाई से पूछा था। वो बोला कि परीक्षा में किताब-काँपी ले जाने की छूट है, कोई नहीं पकड़ने वाला।”

केशव के बड़े भाई ने *बाल विज्ञान* पढ़ रखा था। उसने केशव को बताया था कि इस परीक्षा में रटने वाले प्रश्न नहीं पूछे जाते, ‘समझ’ वाले प्रश्न पूछे जाते हैं। इसलिए केशव बड़े आत्मविश्वास से बता रहा था, “परीक्षा में किताब में से एक भी सवाल नहीं आता।”

“तो फिर परीक्षा कैसी होती होगी?” डमरू मचलकर बोला।

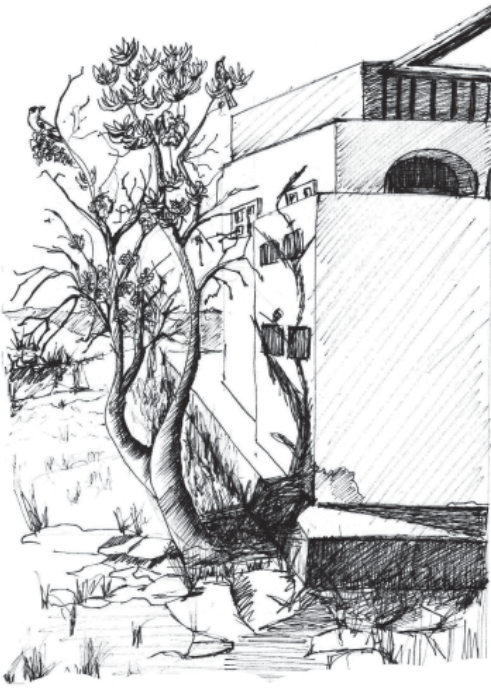
“अरे, *बाल विज्ञान* की परीक्षा में घबराना मत। देख... अपन प्रेक्टिकल तो अच्छा ही देंगे।” केशव खुद भी घबरा रहा था मगर उसने डमरू के कन्धे पर हाथ रखते हुए सान्त्वना दी।



“तो तू स्कूल जाए तो मेरी अर्जी दे देना।” केशव ने जेब में से अर्जी निकालकर डमरू को थमाते हुए कहा।

“मैं भी स्कूल नहीं जा रहा आज। बाबूजी कह रहे थे कि गाँव में मज़दूर मिल नहीं रहे हैं। खेत में चने कट रहे हैं। मुझे भी खेत पे जाना है।” डमरू ने अर्जी लौटाते हुए कहा।

ठण्ड के मौसम की विदाई हो



वहीं स्कूल में...

फसलों की कटाई की वजह से स्कूल में बच्चों की उपस्थिति में काफी कमी आ चुकी थी। मास्साब सोच रहे थे कि बच्चों की तैयारी करवा दी जाए ताकि वे बेहतर प्रदर्शन कर सकें। परन्तु आठवीं कक्षा में आज कुल चार बच्चे ही आए थे; चन्दू, नारंगी, रघु और विष्णु और वे सब मैदान में खड़े होकर गपिया रहे थे।

मास्साब ने बच्चों को बाहर खड़े देखकर आवाज़ लगाई, “ऐ...”

विष्णु बोला, “मास्साब, छुट्टी दे दो। गणित की पढ़ाई करनी है घर पर।”

मास्साब ने चलते हुए कहा, “कोई छुट्टी-वुट्टी नहीं मिलेगी। घर पर तो जैसे पूरा गणित कर लेगा।”

“नी-नी... सच में, गणित का काम छूट गया है।” विष्णु मास्साब का पीछा कर कहता जा रहा था।

मास्साब ने पलटकर कहा, “अच्छा, पहले कक्षा में आओ फिर बात करेंगे।” कक्षा खाली थी। चारों बच्चे कक्षा में बेमन से बैठे थे। वे समझ रहे थे कि आज कुछ खास होने वाला नहीं है, इसलिए घर जाने को उतावले हो रहे थे।

मास्साब कक्षा में आकर बोले,

चुकी थी। घरों के अन्दर ठण्डक का एहसास होता तो बाहर धूप थोड़ी ही देर में तपन का एहसास कराती। ठण्ड और गर्मी की लुका-छिपी का खेल जारी था। पलाश में दहकते अँगारों जैसे फूल आना शुरू हो चुके थे। स्कूल के पीछे पलाश का सूखा-छितरा-सा पेड़ पूरे शबाब पर था। बिन पत्तों की ढूँठ जैसी शाखाएँ फूलों से लद चुकी थीं। चटक अँगारे के माफिक फूल तरह-तरह की चिड़ियाओं और कीटों को लुभा रहे थे। इधर होली की धींगा मस्ती भी शुरू हो चुकी थी। और उधर रबी की फसलों की कटाई का काम युद्ध-स्तर पर प्रारम्भ हो चुका था।

“चलो, कुछ परीक्षा की बात कर लेते हैं।” वे सोच रहे थे कि अगर वे इन चारों बच्चों के साथ कुछ सार्थक बात करेंगे तो ये बाकी के उन बच्चों के साथ शाम-सबेरे बात तो करेंगे ही कि स्कूल में काम की बात हो रही है। और हो सकता है कि फिर वे बच्चे भी स्कूल आने लगे।

मास्साब बड़े आशावादी दिखाई दे रहे थे। उनके मूड को समझकर विष्णु ने एक बार फिर कहा, “मास्साब... मैं जाऊँ?”

मास्साब ने पूछा, “अच्छा ये बताओ कि क्या काम है तुम्हें?”

विष्णु के पास कोई जवाब नहीं था। दरअसल, वह गणित और सामाजिक अध्ययन से परेशान था। उसे कुछ समझ नहीं आ रहा था। हालाँकि सभी बच्चों का यही हाल था। बच्चे बोर्ड की परीक्षा से आतंकित थे।

“ऐसा है कि अपन को प्रेक्टिकल परीक्षा करनी है... तो ये बाकी के छोरे कब तक आ जाएँगे? ऐसा करो, कल सबको कहना कि स्कूल आ जाएँ।” मास्साब कहते-कहते *बाल विज्ञान* की तीनों किताबों को ध्यान से उलट-पलटकर देख रहे थे।



आईएमपी

“हाँ तो... मैं कह रहा था कि बोर्ड से घबराना बन्द कर दो। इससे डरने की बजाय इसको डराना शुरू कर दो। *बाल विज्ञान* में जो भी तुमने प्रयोग और परिभ्रमण से सीखा है, उस सब को एक बार अच्छे-से समझ लो।” मास्साब बच्चों को ढाढ़स बँधा रहे थे।

विष्णु हिम्मत करके धीरे-से बोला, “मास्साब, आईएमपी बता दो। हम याद कर लेंगे।”

“क्या कहा? विज्ञान में रटने का नहीं है। ये आईएमपी क्या बला है? कहाँ से सीख लिया तुमने ये सब? तुम लोगों ने जो करके सीखा है वही आएगा पेपर में।”

मास्साब चिन्तित हो गए कि आखिर इन बच्चों को भी इस आईएमपी की हवा ने चपेट में ले ही लिया। वे मज़ाकिया अन्दाज़ में बोलने लगे, “तो आईएमपी तो तुमको गाइड और गेस-पेपर में से मिल गए होंगे... क्यों रे, तुम विज्ञान की गाइड पढ़ते हो? अरे, सोचो तो सही कि उसमें मिलेगा क्या तुम लोगों को।” मास्साब ने सोचा कि इन्हें *बाल*

विज्ञान के मूलभूत पहलुओं की ओर मोड़ना होगा।

नारंगी, चन्दू और रघु को कुछ समझ में नहीं आ रहा था कि मास्साब और विष्णु के बीच क्या बात हो रही है।

“एक बात समझ लो तुम - रट्टा बिलकुल मत मारना। और हाँ, गाइड और गेस-पेपर के सवालों के जवाब बिलकुल मत लिखना। जो तुमने समझा है, उसी आधार पर जवाब लिखना।” मास्साब की बातों को बच्चे ध्यान से सुन रहे थे। “एक बात और बता दूँ - क्लास में जो कराया और पढ़ाया है और जो तुमने अपनी कॉपी में लिखा है, उसको एक बार ज़रूर देख लेना।”

रघु को मास्साब की बात याद थी, “मास्साब, आपने बताया था कि छठी और सातवीं की किताब में से भी सवाल पूछेंगे।”

“हाँ, अच्छा याद दिलाया। छठी और सातवीं के कुछ अध्यायों में से ज़रूर सवाल पूछे जाएँगे। मैं इन पाठों की लिस्ट बनवा देता हूँ... ऐसा करो, सबको कल स्कूल आने का बोल दो। फिर परीक्षा की तैयारी कैसे करना है, अपन इस पर बात करेंगे।”

बीती कक्षाओं से सवाल क्यों?

दरअसल, कई सालों तक तो मास्साब समेत कई शिक्षकों के गले यह बात नहीं उतरी थी कि आखिर

पिछली कक्षाओं का कोर्स क्यों पूछा जा रहा है। इस पर शिक्षक आए दिन स्रोत सदस्यों के सामने इस समस्या को रखते। इसके पीछे तर्क यह दिया गया था कि अगर एक बार उन मूलभूत कौशलों को समझ लिया जाए तो फिर वे बच्चों के ज़हन में अच्छे से उतर जाते हैं। और ये सब कौशल एवं अवधारणाएँ ऐसी हैं जो विभिन्न विषयों में बार-बार काम आती हैं। मसलन, दूरी नापना, घट-बढ़, अल्पतम नाप, ग्राफ बनाना सीखना, आयतन, क्षेत्रफल आदि के कौशल अगर पिछली कक्षाओं में अच्छे से सीख-समझ लिए गए हैं, तो फिर आँकड़े किताब से बाहर के ही क्यों न दिए जाएँ, बच्चे उन्हें हल कर सकते हैं।

इसी प्रकार से समूहीकरण एक मूलभूत अवधारणा है। अगर समूह बनाने का हुनर बच्चों ने आत्मसात कर लिया तो वे दुनिया की किन्हीं भी चीज़ों के समूह बनाकर उनके गुणधर्म चुन सकते हैं। समूहीकरण एक ऐसी अवधारणा है जो विज्ञान का आधार बनाती है। उच्च कक्षाओं और जीवन में भी समूहीकरण की अवधारणा महत्वपूर्ण भूमिका अदा करती है। वर्गीकरण भी तो एक प्रकार का समूहीकरण ही है। इसी प्रकार विज्ञान की मूलभूत प्रक्रिया में प्रयोगों में तुलना का प्रावधान, तालिका बनाना व उसे पढ़कर समझना, स्तम्भालेख बनाना तथा पढ़ना व पढ़कर निष्कर्ष

निकालना शामिल हैं। उल्लेखनीय है कि स्थानीयता को *बाल विज्ञान* में काफी तवज्जो दी गई है, और इसलिए स्थानीय स्रोतों से उपकरण बनाने की क्षमता को जाँचना भी प्रायोगिक परीक्षा में शामिल किया गया था।

परीक्षा की तैयारी

अगले दिन अधिकांश बच्चे स्कूल में आ चुके थे। बच्चे उतावले मगर सहज थे कि आज मास्साब उन्हें कुछ बताने वाले हैं।

कक्षा में प्रवेश कर मास्साब ने परीक्षा की तैयारी करवाने का काम शुरू किया। “पहले तो, परीक्षा के भूत को मन से निकाल दो। मैं कुछ सवालियों के नमूने आप लोगों को हल करने को दूँगा। फिर तुम समझने की कोशिश करना कि परीक्षा कैसे होती है। वैसे, तुम्हारी परीक्षा वैसी ही होगी जैसी पिछली कक्षाओं में हुई थी। याद है न? तुमको टू-इन-वन पेपर दिया था। वैसा ही पेपर आएगा। बस थोड़ा बड़ा जरूर होगा।”

“मास्साब, पेपर में ही जवाब लिखना होगा?” नारंगी ने पूछा। मास्साब ने “हाँ” में सिर हिलाया। फिर उन्होंने बच्चों को पिछली बोर्ड परीक्षा के प्रश्न-पत्र की कुछ प्रतियाँ दे दीं ताकि उन्हें कुछ आइडिया मिले। “तो चलो, हम कुछ प्रश्न हल करने की कोशिश करते हैं।”

मास्साब ने बोर्ड पर मापन का

प्रश्न लिख पैमाने का चित्र बनाया। अब बच्चों से कहा कि इस प्रश्न को हल करें। मास्साब ने ज़ोर देकर कहा कि वे अपनी किताब का इस्तेमाल कर सकते हैं।

बच्चे प्रश्न को हल करने की कोशिश में जुट गए। प्रश्न सरल-सा ही था। पैमाने से मापन के प्रश्न के पाँच उपखण्ड थे। मास्साब ने बोर्ड पर लिखे प्रश्न को पढ़ते हुए पूछना शुरू किया। बच्चे सटीक जवाब दे पा रहे थे। अब मास्साब ने कहा, “तुमने जो भी जवाब दिए हैं, उनको लिख लो।” बच्चे लिखने की कोशिश कर रहे थे। और मास्साब भली-भाँति समझ रहे थे कि उन्हें असल दिक्कत आ रही है लिखने की।

मास्साब ने फिर से सबका ध्यान अपनी ओर खींचा, “देखो, तुम अपनी समझ से, अपनी ही भाषा में लिखो। इसकी मनाही नहीं है।”

“तो अब पैमाने की बातें समझ में आ गईं न?” मास्साब बच्चों में उत्पन्न हो रहे आत्मविश्वास के जज़्बे को पढ़ रहे थे। “पैमाने के बारे में अगर तुम लोगों को पता है और किसी चीज़ को मापना अगर आता है, तो किसी भी तरह का सवाल तुम हल कर सकोगे, ये मेरा दावा है।”

‘बोर्ड’ परीक्षा - एक मज़ाक?

कक्षा का माहौल अब बदला-बदला-सा लग रहा था। बच्चे कहने लगे, “अब दूसरा सवाल दो।” मास्साब

एक अन्य सवाल बोर्ड पर लिख रहे थे कि चन्दर को कुछ खुसर-फुसुर करते हुए मास्साब ने पकड़ लिया, “क्यों भई, कोई खास बात है जो अपने दोस्तों से कर रहे हो?”

रघु बोल पड़ा, “मास्साब, यह कह रहा है कि बोर्ड की परीक्षा ‘बोर्ड’ पर होगी।”

रघु के मुँह से यह सुनकर मास्साब हँसी के मारे लोट-पोट हो गए। वे बोले, “सही कहा! वैसे, बोर्ड का मतलब है कि पेपर कहीं और से आते हैं। पाँचवीं में भी तुम्हारी बोर्ड की परीक्षा हुई थी। बोर्ड की परीक्षा में पेपर बाहर से आते हैं और कॉपी भी बाहर जँचती है। हालाँकि बोर्ड की परीक्षा को लेकर यह हकीकत एक चुटकुला बन चुकी है। इसमें नकल करने-कराने जैसे कई अनैतिक पहलु जुड़ चुके हैं। बोर्ड की परीक्षा में



परीक्षा हॉल में बोर्ड पर प्रश्नों के जवाब लिख दिए जाते हैं, और वही जवाब बच्चे अपनी उत्तर-पुस्तिकाओं में लिख लेते हैं। इसीलिए इसका दूसरा अर्थ ‘बोर्ड’ की परीक्षा अर्थात् बोर्ड पर परीक्षा हो गया।”

बच्चों को यह सबकुछ समझ में नहीं आ रहा था। वे तो परीक्षा नामक भूत से भयभीत थे। हालाँकि मास्साब भी परीक्षा से उतने ही परेशान थे जितना कि बच्चे। वे बच्चों को परीक्षा रूपी भूत से डटकर सामना करने का हौसला दिलाने का भरसक प्रयत्न कर रहे थे।

मास्साब सोच रहे थे कि परीक्षा का अर्थ हो चला है, शिक्षक पर शक करना। फिर शिक्षक बच्चों पर शक करता है। और यह शक करने की परम्परा पनपती रहती है।

कुछ अभ्यास

उधर देश भर के अधिकांश पढ़ने-लिखने वाले बच्चों के घरों में परीक्षा ने आतंक मचा रखा था, मगर होशंगाबाद विज्ञान का अध्ययन कर रहे बच्चों को कम-से-कम *बाल विज्ञान* की परीक्षा ने राहत की साँस दिलाई थी।

कक्षा में बच्चों को और भी प्रश्नों के नमूने हल करने को दिए जा रहे थे। एक प्रश्न जो बच्चों को अमूमन हल करने को ज़रूर दिया जाता रहा है, वही मास्साब ने बोर्ड पर लिखा। इस प्रश्न की तासीर कुछ इस प्रकार

मास्साब ने तालिका बनाकर बोर्ड पर लिखा था:

नीचे बनी तालिका में चार पदार्थों के बारे में कुछ जानकारी दी गई है:

पदार्थ	पानी में घुलता है?	ऊर्ध्वपातन होता है?
नौसादर	हाँ	हाँ
कपूर	नहीं	हाँ
नमक	हाँ	नहीं
रेत	नहीं	नहीं

की है जिससे बच्चों के तालिका पढ़ने और उसके निष्कर्ष निकालने के हुनर की जाँच होती है।

(क) कपूर और नौसादर के मिश्रण में से दोनों पदार्थ अलग-अलग कैसे प्राप्त करोगे?

(ख) कपूर, नौसादर, नमक और रेत के मिश्रण में से चारों पदार्थ अलग-अलग कैसे प्राप्त करोगे?

बच्चों को जब यह प्रश्न दिया तो उनके चेहरे पर खुशी झलक रही थी। ऐसा लगा कि इसे तो वे हल कर ही लेंगे। वैसे बच्चे 'चीज़ों को अलग-अलग करना' नामक अध्याय में इससे सम्बन्धित प्रयोग भी कर चुके थे। प्रश्न में जो चीज़ें दी गई थीं, वे बच्चों के परिवेश की ही थीं। बच्चे विभिन्न पदार्थों की घुलनशीलता व ऊर्ध्वपातन सम्बन्धी गुणों को प्रयोगों के माध्यम से समझ चुके थे। इस जानकारी के आधार पर बच्चों से अपेक्षा की जा

रही थी कि वे तार्किक प्रक्रिया के द्वारा खुद सोचकर बताएँ कि मिश्रण में से पदार्थों को अलग-अलग कैसे करेंगे। इस प्रश्न में गौण रूप से पृथक्करण की विधियों की, और प्रमुख रूप से तार्किक विवेचन की जाँच की जा रही थी। यदि कोई बच्चा पृथक्करण की विधियों को आंशिक रूप से भूल भी गया होगा तो भी यदि उसने ये प्रयोग किए हैं तो केवल तार्किक प्रक्रिया से इस प्रश्न का जवाब दे सकता है।

बच्चों ने इस प्रश्न को आसानी-से हल कर लिया।

मास्साब के अब तक के अनुभवों में सबसे बड़ी चिन्ता थी ग्राफ को लेकर। दरअसल, बच्चे ग्राफ को पढ़ तो लेते थे मगर ग्राफ बनाने का हुनर आत्मसात नहीं कर पा रहे थे। इसकी एक वजह यह हो सकती है कि गणित में बच्चे बेहद कमज़ोर थे। ग्राफ

के आँकड़ों को बच्चे दोनों अक्षों पर सही तौर पर रख तो पाते थे मगर पैमाना चुनने में काफी दिक्कत होती। हालाँकि, *बाल विज्ञान* के सम्बन्धित अध्याय को विकसित करने के दौरान भी इस समस्या को पहचानते हुए विशेष ध्यान दिया गया था।

मास्साब ने आँकड़े देकर उन्हें ग्राफ बनाने का अभ्यास दिया था। कक्षा के कुछ बच्चे ही इस हुनर में पारंगत हो पाए थे। अधिकांश बच्चे पैमाना चुनने का आत्मविश्वास अर्जित नहीं कर पाए थे। अतः मास्साब ग्राफ बनाने के अभ्यास बारम्बार करवाने की भरसक कोशिश कर रहे थे।

प्रायोगिक परीक्षा का खास ढंग

परीक्षा नज़दीक आती जा रही थी। प्रायोगिक परीक्षा की चिन्ता बच्चों को कतई नहीं थी। जो प्रयोग उन्होंने किए थे उनमें से, या उन जैसे ही प्रयोग पूछे जाने वाले थे। प्रायोगिक परीक्षा का आयोजन स्थानीय स्तर पर स्कूल में पढ़ाने वाले शिक्षक एवं अनुवर्तनकर्ता (या, सुगमकर्ता) को मिलकर करना था। संगम केन्द्र पर आयोजित मासिक बैठक में समस्त स्कूलों की प्रायोगिक परीक्षा का कार्यक्रम तैयार किया जा चुका था। लिखित परीक्षा के ठीक एक हफ्ते पहले प्रायोगिक परीक्षा का आयोजन किया जाना तय हुआ था।

निर्धारित तिथि पर परीक्षक स्कूल आ पहुँचे थे। प्रावधान यह किया गया

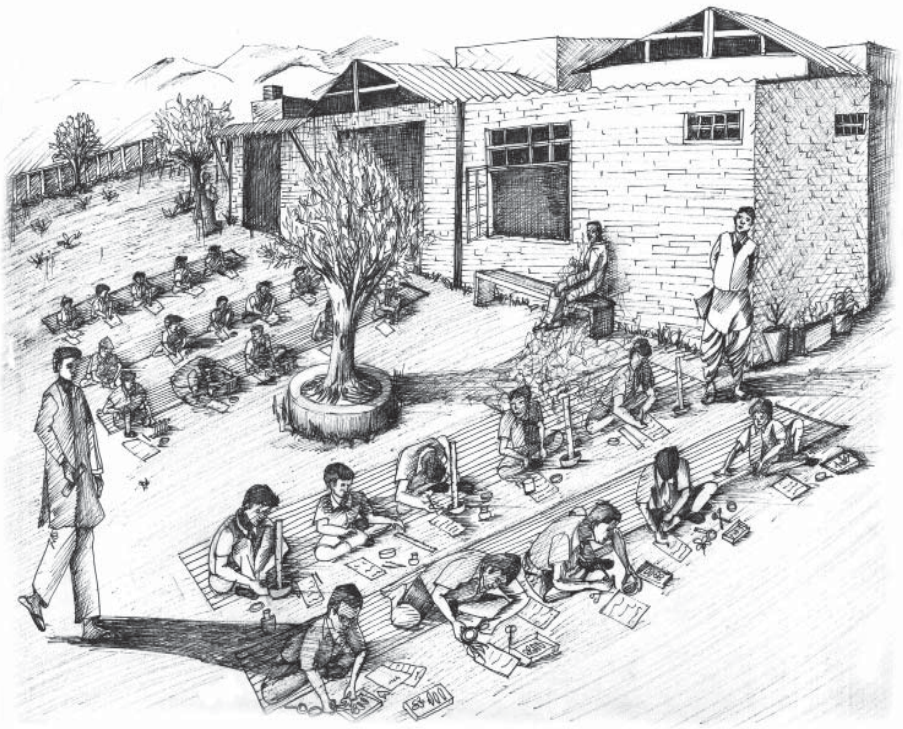
था कि प्रायोगिक परीक्षा में एक प्रशिक्षित शिक्षक, जिसे परीक्षक कहा जाता था, उपस्थित रहेंगे।

बच्चों की मदद से मास्साब ने प्रायोगिक परीक्षा में लगने वाली सामग्री पूर्व में ही एकत्र करवा ली थी, जिसकी सूची एक सप्ताह पहले स्कूल को भेज दी गई थी।

स्कूल के बरामदे में कक्षा आठवीं के बच्चों की प्रायोगिक परीक्षा की बैठक व्यवस्था की गई। इसमें सहायता के लिए छठी और सातवीं के कुछ बच्चों को बुला लिया गया था। आठवीं के बच्चों को कक्षा में बैठने को कहा गया। मास्साब व बाहर से आए परीक्षक ने पेपर का लिफाफा खोला और उसको पढ़ा। पर्चे को पढ़कर प्रयोगों के सेट जमाने का सिलसिला शुरु हुआ।

प्रायोगिक परीक्षा के पर्चे में से कुल जमा पाँच प्रयोग पूछे जाने का प्रावधान था। पहला प्रयोग मापन, दूसरा पर्यावरण के प्रति सजगता, तीसरा रसायन, चौथा वैज्ञानिक प्रक्रियाएँ, पाँचवाँ सामान्य अवधारणाएँ एवं छठा विशेष। पहले तीन प्रयोग आवश्यक थे। शेष प्रयोगों में से परीक्षक को किन्हीं भी दो को चुनने की आज़ादी थी।

परीक्षक की सहायता से बरामदे में प्रयोग के सेट तैयार किए जा चुके थे। कुल जमा पाँच प्रयोग सेट किए गए थे। एक बार में पच्चीस बच्चों की



परीक्षा के लिहाज़ से प्रत्येक प्रयोग के पाँच-पाँच सेट बनाए थे। फर्श पर प्रयोग का क्रमांक चॉक से लिख दिया गया। प्रत्येक प्रयोग के लिए 15 मिनट का समय निर्धारित किया गया। समय और प्रयोग के स्वरूप को लेकर प्रायोगिक परीक्षा में लचीलेपन का रुख अपनाया जाता रहा है। अगर किसी बच्चे को 15 मिनट से ज़्यादा वक्त लगे तो उसे अतिरिक्त समय उपलब्ध करा दिए जाने के उदाहरण भी सुनने को मिलते हैं। इसी प्रकार से प्रयोगों की तासीर में काफी

खुलापन होता। अगर फूल को खोलने का प्रयोग रखा जाता तो स्थानीय स्तर पर जो भी सामान्य फूल मिल जाए, उसे शामिल कर लिया जाता।

कई स्कूलों में किट के अभाव से निजात पाने के अनेक रास्ते निकाले गए थे। अगर पास की स्कूल में किट सामग्री है तो वहाँ से उधार ले ली जाती, जो प्रायोगिक परीक्षा के उपरान्त लौटा दी जाती। मास्साब ने इस बारी संगम केन्द्र के अन्य स्कूलों से किट के तराजुओं की व्यवस्था की थी। दरअसल, किट में प्रति स्कूल

एक कक्षा के लिए एक तराजू का प्रावधान था। संगम केन्द्र के चार अन्य स्कूलों से चार तराजू और बाट के सेट की व्यवस्था मास्साब ने पहले से ही कर ली थी।

प्रयोग शुरू

बच्चे बड़े सहज दिखाई दे रहे थे। मास्साब को भी विश्वास था कि बच्चे बढ़िया काम करेंगे। प्रायोगिक परीक्षा प्रारम्भ हो चुकी थी। परीक्षक ने प्रायोगिक परीक्षा के पर्चे को बोर्ड पर लिख दिया था और बच्चों को सम्बन्धित निर्देश दिए जा रहे थे।

परीक्षक ने बच्चों से बड़े रोचक अन्दाज़ में कहा, “प्रायोगिक परीक्षा तुम्हारे लिए नई चीज़ नहीं है, है न! तुमने छठी-सातवीं में भी प्रायोगिक परीक्षा दी है। इसलिए डरने और घबराने की बिलकुल ज़रूरत नहीं है।”

बच्चों को परीक्षक की बात अच्छी लगी और सभी ने सिर हिलाकर जवाब दिया।

अब मास्साब कुछ बता रहे थे, “जो बच्चा जहाँ पर प्रयोग कर रहा है, उसको अपना प्रयोग करके दूसरे प्रयोग पर आना होगा। हरेक प्रयोग के लिए 15 मिनट का समय है। इसके बाद अगले प्रयोग पर जाना होगा।”

बच्चे प्रयोग हल करने में मशगूल हो गए। जब घण्टी बजती और प्रयोग पूरा हो जाता तो बच्चे अगले प्रयोग

पर चले जाते। इस प्रकार पाँचवें प्रयोग पर बैठा छात्र चौथे पर, चौथे वाला तीसरे पर... और पहले प्रयोग पर बैठा छात्र पाँचवें पर आ पहुँचता। तीसरा प्रयोग रसायन शास्त्र की कुशलता जाँचने का था। परीक्षक तीसरे प्रयोग पर अपनी नज़रें गड़ाए हुए थे। वे बच्चों से कुछ मौखिक सवाल-जवाब भी करते दिख रहे थे।

परीक्षा सम्पन्न हो जाने पर मास्साब ने बच्चों की मदद से प्रयोग वगैरह का सामान एकत्र करवाकर साफ-सफाई की, और फिर बच्चों को कहा कि वे अब जा सकते हैं।

कक्षा आठवीं बोर्ड की प्रायोगिक परीक्षा की उत्तर पुस्तिकाओं को जाँचने का कार्य परीक्षक ने परीक्षा स्थल पर ही प्रारम्भ कर दिया था। परीक्षक ने बच्चों के प्रयोग करने के कौशल और उनसे सम्बन्धित सवालों के जवाबों का विवरण एक कागज़ में अलग से लिख रखा था। उत्तर पुस्तिकाओं को जाँचकर तथा बच्चों की प्रयोग करने की काबिलियत के आधार पर अंकसूची तैयार कर प्रायोगिक परीक्षा का भविष्य लिफाफे में सीलबन्द कर दिया गया था। प्रायोगिक परीक्षा पूरी करवाकर परीक्षक ने सीलबन्द लिफाफा संगम केन्द्र पर जमा कर दिया।

जैसी शिक्षा, वैसी परीक्षा

बच्चों ने प्रायोगिक परीक्षा से हैंसते-खेलते मुक्ति पा ली थी। अब

उन्हें लिखित परीक्षा का सामना करना था। *बाल विज्ञान* की परीक्षा से वे बहुत-ज्यादा घबराए हुए नहीं थे।

सुबह-सुबह का वक्त बड़ा सुहाना था। हल्के-से बादल छा चुके थे। बादलों के बीच में से सूरज अपनी किरणें बिखेर रहा था। धूप कभी तेज़ होती तो कभी मद्धिम। वातावरण में खुशनुमा ठण्डक थी। मगर बच्चों के दिमाग में गर्माहट थी।

घण्टी बजते ही सभी बच्चे परीक्षा के कमरे में प्रवेश कर गए। बच्चों के हाथ में *बाल विज्ञान* की पुस्तकें भी मौजूद थीं।

दरअसल, *बाल विज्ञान* की लिखित परीक्षा में तीनों सालों की किताबें और नोटबुक ले जाने की छूट थी। इसके पीछे समझ यह थी कि बच्चों से रटी हुई जानकारीयाँ और तथ्य वगैरह नहीं पूछे जाएँगे, बल्कि उन्होंने क्या समझा और आत्मसात किया है, उसकी जाँच होगी। बच्चों ने विभिन्न प्रयोगों और परिभ्रमण के दौरान जो अवलोकन और निष्कर्ष निकालने के हुनर सीखे हैं, उन्हें विभिन्न परिस्थितियों में आजमाने की जाँच होगी। इस लिहाज़ से किसी प्रश्न में किसी विशेष जानकारी या किसी नियम आदि की आवश्यकता हो तो परीक्षा में किताब व नोटबुक में से देखा जा सकता था। इसके पीछे सोच यह थी कि इससे रटने पर रोक लगेगी और परीक्षा का तनाव भी कम होगा। और दरअसल ऐसा हुआ भी!

परीक्षा की इस प्रक्रिया ने कुंजी, गेस-पेपर्स और गाइडों को कठघरे में खड़ा कर दिया था। हालाँकि, बाज़ार में ये सब उपलब्ध थे और बिक भी रहे थे। कई बार तो अभिभावक अपने बच्चों की चिन्ता करके उनसे बिना पूछे ये सब खरीदकर दे देते थे। हालाँकि, परीक्षा में इनसे कोई मदद नहीं मिलती थी।

खुली किताब परीक्षा या यूँ कहें कि 'जैसी शिक्षा वैसी परीक्षा' के चलते शिक्षक समुदाय के सामने प्रश्न-पत्र निर्माण का कार्य खासी चुनौती भरा होता था। होशंगाबाद विज्ञान के माध्यम से खुली किताब परीक्षा की अवधारणा को स्वीकारना अपने आप में एक ऐतिहासिक कदम था। होशंगाबाद विज्ञान के दस्तावेज़ में साफ तौर पर लिखा था कि परीक्षा में परिभाषाएँ, नियम आदि नहीं पूछे जाएँगे। इस वजह से शिक्षकों को ऐसे प्रश्न बनाना होते थे जो किताब से सीधे-सीधे न उठाए गए हों मगर उनमें निहित अवधारणाओं पर आधारित हों।

तूने क्या लिखा?

बच्चों का कारवाँ *बाल विज्ञान* की परीक्षा देकर स्कूल से निकल पड़ा था। बच्चों के चेहरों पर खुशी झलक रही थी। वे आपस में बातें करते हुए जा रहे थे।

“अरे, वो फसल वाले में तूने क्या लिखा?”

डमरू ने कहा, “एक तो चना और दूसरा मूँगफली लिखा।”

“अरे, मैंने तो मूँग और चँवला लिखा।”

“मैंने उड़द और सोयाबीन लिखा।”

“अच्छा, ये बता कि चित-पट वाले में क्या लिखा?”

“मैंने तो पट लिखा। और तूने?”

“मैंने तो चित लिखा।”

“अच्छा, अपन नम्बर तो नहीं जोड़ सकते कि कितने आएँगे।”

“हाँ, पेपर में नम्बर लिखे ही नहीं थे।”

“पता नहीं ऐसा क्यों करते हैं।”

“बाकी पेपर में तो नम्बर होते हैं।”

दरअसल, *बाल विज्ञान* में कुछ प्रश्न खुले जवाबों वाले ज़रूर होते। जब पूछा गया कि द्विबीजपत्री फसलों के नाम बताओ तो बच्चे इतने सक्षम हो चुके थे कि वे अपनी मर्ज़ी से नाम चुनते और जवाब लिखते। इसी प्रकार जब संयोग और सम्भाविता की अवधारणा को लेकर पूछा गया कि सिक्के को उछालें तो अगली बारी में चित आएगा या पट, तो इसके दोनों ही जवाब - चित और पट - सही हो सकते हैं। हालाँकि, इस प्रकार के प्रश्न में अगर बच्चे की समझ नहीं बनी और उसने अन्दाज़ से भी लिख दिया तो जवाब के अंक मिल जाते। मगर ऐसा बहुत ही कम होता था।

अंक पुनर्निर्धारण की प्रक्रिया

परीक्षा के बाद की बहुत-सी प्रक्रियाओं से बच्चे बेखबर थे। आगे की प्रक्रिया होविशिका बिरादरी के शिक्षकों के द्वारा सम्पन्न की जाती। होविशिका में प्रश्न-पत्रों को जाँचने के पहले एक लम्बी प्रक्रिया से गुज़रना होता था। इस प्रक्रिया का एक महत्वपूर्ण हिस्सा था, अंकों का पुनर्निर्धारण। अंकों के पुनर्निर्धारण का एक पहलू था, बच्चों ने जो जवाब उत्तर-पुस्तिकाओं में लिखे हैं उनकी समीक्षा करना, और दूसरा, समीक्षा के आधार पर नए मूल्यांकन निर्देश तैयार कर जाँचना।

कितनी भी कुशलता और सावधानी से प्रश्न बनाए जाएँ, उनमें खामियाँ हो सकती हैं व सुधार की गुंजाइश बनी रहती है। साथ ही, प्रश्न-पत्र को जिस ढंग से बच्चे हल करते हैं, वह भी प्रश्न-पत्र पर एक टिप्पणी है। यदि समीक्षा की इस प्रक्रिया को ज़्यादा सतर्कता और बारीकी-से किया जाए तो यह पाठ्यक्रम व शिक्षण पद्धति के सुधार का एक उम्दा आधार बन सकती है।

अंक पुनर्निर्धारण प्रक्रिया को अपनाने से कई सारी बातों का पता चलता। एक तो यह कि हो सकता है, प्रश्न-पत्र में प्रश्नों की भाषा और चित्रों की वजह से बच्चे प्रश्न को ठीक उसी तरह से न समझ सकें

जिस रूप में प्रश्न-पत्र निर्माता की अपेक्षा थी। ऐसे में बच्चों के जवाब अपेक्षित उत्तरों से भिन्न भी हो सकते हैं। आम परीक्षाओं में इन सभी 'भिन्न' जवाबों को गलत मानकर मूल्यांकन किया जाता है। कभी यह नहीं सोचा जाता कि हो सकता है कि प्रश्न के स्वरूप के आधार पर वे 'भिन्न' जवाब भी तार्किक हों। अगर ऐसा है तो इन्हें भी सही की श्रेणी में शामिल किया जाना चाहिए।

दूसरी प्रमुख बात यह थी कि किसी प्रश्न का स्तर अगर अत्यन्त कठिन है और किसी भी बच्चे ने उसे हल नहीं किया हो, या इतना सरल हो कि सभी बच्चों ने उसे हल कर लिया हो, तो इन दोनों परिस्थितियों में समस्या है। ऐसे में वह प्रश्न बच्चों की सापेक्ष कुशलता को जाँचने के लायक नहीं है। अतः ऐसे प्रश्नों का वज़न (आनुपातिक महत्व) कम करते हुए उन प्रश्नों का वज़न बढ़ाया जाता

जो सापेक्ष अन्तर को बखूबी उभारते हों।

यह प्रक्रिया एक सांख्यिकीय विधि के आधार पर की जाती। इसके लिए बच्चों की उत्तर-पुस्तिकाओं को रैंडम विधि से छाँटा जाता और उन्हें जाँचा जाता। यह प्रक्रिया थोड़ी पेचीदा और उबाऊ ज़रूर थी, मगर थी अत्यन्त महत्वपूर्ण।

आदर्श और प्रतिरोध

होविशिका में परीक्षा का जो आदर्श स्वरूप तय किया गया था, वह शिक्षा जगत में जड़ जमा चुके कर्मकाण्डों तथा भय व शक के चलते सही रूप में परिलक्षित नहीं हो पा रहा था। आखिर पास-फेल के खाँचों में बच्चों को बाँट ही दिया जाता था। मगर होविशिका उन कर्मकाण्डों, भय व शक की जड़ों को कमज़ोर करने में कुछ हद तक कामयाब ज़रूर हो पाया था।

कालू राम शर्मा (1961-2021): अज़ीम प्रेमजी फाउण्डेशन, खरगोन में कार्यरत थे। स्कूली शिक्षा पर निरन्तर लेखन किया। फोटोग्राफी में दिलचस्पी। *एकलव्य* के शुरुआती दौर में धार एवं उज्जैन के केन्द्रों को स्थापित करने एवं मालवा में विज्ञान शिक्षण को फैलाने में अहम भूमिका निभाई।

सभी चित्र: योगेश्वरी: स्वतंत्र रूप से चित्रकारी करती हैं। साथ ही, म्यूरल और पोर्ट्रेट भी बनाती हैं। शारदा उकील स्कूल ऑफ आर्ट से कला में डिप्लोमा। वर्तमान में, अम्बेडकर यूनिवर्सिटी, दिल्ली से विजुअल आर्ट्स में स्नातकोत्तर कर रही हैं।